विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 13-06-2021

वर्ग अष्टम शिक्षक -राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

पररूप संधि - एडि पररूपम् -

पररूप संधि

पररूप संधि का सूत्र एडि पररूपम् होता है। यह संधि स्वर संधि के भागो में से एक है। संस्कृत में स्वर संधियां आठ प्रकार की होती है। दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि, अयादि

संधि, पूर्वरूप संधि, पररूप संधि, प्रकृति भाव संधि। P पररूप संधि का अध्ययन करेंगे !

पररूप संधि के नियम

नियम - पदांत में अगर “अ” अथवा “आ” हो और उसके परे ‘एकार/ओकार’ हो तो उस उपसर्ग के एकार/ओकार का लोप हो जाता है। लोप होने पर अकार/ओकार ‘ए/ओ’ उपसर्ग में मिल जाता है।

पररूप संधि के उदाहरन्

प्र + एजते = प्रेजते

उप + एषते = उपेषते

परा + ओहति = परोहति

प्र + ओषति = प्रोषति

उप + एहि = उपेहि

यह संधि वृद्धि संधि का अपवाद भी होती

पूर्वरूप संधि -

'एङः पदान्तादति' सूत्र द्वारा संहिता के विषय में यदि पद के अन्त में एङ् (ए, ओ) (स्वर) आए और उसके बाद ह्रस्व 'अ' आए तो पूर्व एवं पर वर्गों के स्थान पर पूर्वरूप संधि एकादेश होता है, तथा अकार की स्पष्ट प्रतीति के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) हो जाता है।

पूर्वरूप संधि के नियम

इनके क्रमशः पूर्वरूप संधि

पूर्वरूप संधि के उदाहरण -

(अ)ए + अ = ए

अन्ते + अपि = अन्तेऽपि

ते + अत्र = तेऽत्र

हरे + अव = हरेऽव

मे + अन्तिके = मेऽन्तिके

दीर्घ + अहनि = दीर्घऽहनि

(आ) ओ + अ = ओ

विष्णो + अत्र = विष्णोऽत्र

सो + अवदत् = सोऽवदत्

रामो + अहसत् = रामोऽहसत्

को + अपि = कोऽपि

प्रकृति भाव संधि

प्रकृति भाव संधि का सूत्र ईदूद्विवचनम् प्रग्रह्यम् होता है। यह संधि स्वर संधि के भागो में से एक है। संस्कृत में स्वर संधियां आठ प्रकार की होती है। दीर्घ संधि, गुण संधि, वृद्धि संधि, यण् संधि, अयादि संधि, पूर्वरूप संधि, पररूप संधि, प्रकृति भाव संधि। इस पृष्ठ पर हम प्रकृति भाव संधि का अध्ययन करेंगे !

प्रकृति भाव संधि के नियम

नियम - ईकारान्त, उकारान्त , और एकारान्त द्विवचन रूप के वाद यदि कोइ स्वर आये तो

प्रक्रति भाव हो जाता है। अर्थात् ज्यो का त्यो रहता है ।

प्रकृति भाव संधि के उदाहरन्

हरी + एतो = हरी एतो

विष्णू + इमौ = विष्णु इमौ

लते + एते = लते एते

अमी + ईशा = अमी ईशा

फ़ले + अवपतत: = फ़ले अवपतत